भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केन्द्रीय कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

9 जनवरी, 2018

ब्राह्मणीय अक्खड़पन और दलितों की आत्मसम्मान का प्रतीक है कोरेगांव भीमा

महाराष्ट्र के कोरेगांव भीमा में एक जनवारी को अपनी ऐतिहासिक विजयपर्व को मनाने के लिए जमा हुए हजारों दलित, जनवादी और धर्मनिरपेक्ष शक्तियों पर हिन्दू धर्मोन्मद शक्तियां घातक हथियारों से लैस होकर हमले कर, दलितों के आत्मसम्मान का प्रतीक के रूप में मनाने वाली उत्सव में दंगे करने पर उतारू हो गए हैं। इस घिनौने हमलों की हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) घोर निन्दा करती है। बुरे ब्राह्मणीय धर्मोन्माद शक्तियों के खिलाफ हिम्मत से लड़कर उन्हें हराने के सिवाय, दलित, आदिवासी और धर्मिक अल्पसंख्यकों के लोगों के अस्थित्व और आत्मसम्मान के लिए खतरा के रूप में उभरी हिन्दुत्व से गम्भीर खतरे को रोकना सम्भव नहीं है।

महाराष्ट्र में शिवाजी का शासन 1674-80 के बीच में चला था। उसके बाद पीष्वों के नेतृत्व में मराठों के शासन चलाया गया था। मराठा लोग मोगल राजशाह के हमलों को हराने के बावजूद ब्रिटिश सेनाओं को हरा नहीं पाये थे। मराठों को हराने के बाद ब्रिटिशों ने पूणे को अपने सैनिक और प्रशासनिक केन्द्र के रूप में बनाए थे। 19वीं सदी के पहली भाग में पीष्वा लोगों ने अपने 28 हजारों सेनाओं को लेकर पूणे को कब्जा करने के लिए कोशिश किया। तब ब्रिटिश सेनाएं 12 घंटे प्रतिरोध कर पूणे को उनके कब्जे में जाने नहीं दिया। तत्कालीन ब्रिटिश सेना में शामिल होकर पीष्वा सेना को प्रतिरोध करने वाले सैनिक सभी भारतीय दलित ही थे। दलितों के हाथों पीष्वा सेना के हार को, दलित लोग ब्रिटिश वालों से अपने आप को अलग कर, अपनी विजय दिवस के रूप में, आत्मसम्मान के प्रतीक के रूप में एक जनवरी को बीते दो शताब्दों से मना रहे हैं। इस तरह वे हर वर्ष इस विजय दिवस को मनाना ब्राह्मणीय ताकतों को हजम नहीं हो रहा है। राज्य में और केन्द्र में अपनी सत्ता स्थापित करने से उपजे घमण्ड से इस बार एक जनवरी, 2018 को हिन्दुत्व गुण्डें शम्भाजी भीडे और मिलिन्द लिम्बोडी के नेतृत्व में उनके गुण्डें कोरेगांव भीमा पहुंच कर दलितों और उनके समर्थकों पर घातक हथियारों से हमले किए थे। दसियों संख्या में भगवा आतंकवादी शक्तियां कुकर बम विस्फोट कर लोगों में आतंक मचाया। कोरेगांव के लोगों को आतंकित किया। इन हमलों में एक दलित युवक के जाने गए और कई घायल हो गए। बहुत पहले से ही दलित संगठनों के नेता अपनी उत्सवों का संचालन के बारे में सरकार और पुलिस को जानकारी देने के बावजूद वे सही सुरक्षा इन्तेजाम नहीं किया, बल्कि हिन्दुत्व गुण्डों के हमलों को प्रोत्साहन दिया। दलितों को कड़ी सबक सिखाकर, आगे वे इस तरह की आत्मसम्मान दिवस न मनावें - इस मकसद से ही सरकार और पुलिस मिलकर भगवा आतंकवादी गुण्डों के हमलों को उक्सााया गया। दरअसल ये सब एक सुनियोजित योजना के तहत ही हुई थी। केन्द्र और राज्य सरकारों, उनके खुफिया विभागों, संघ गिरोह के शक्तियों द्वारा संयुक्त रूप से तय की गयी बुरी योजना को ही शम्भाजी और मिलिन्द के गैंगों ने लागू किया। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड्णवीस के भगवा कुटिल कार्यनीति को देश भर में भण्डाफोड़ करने हमारी पार्टी दलित, आदिवासी और अल्पसंख्यक लोगों, जनवादी और धर्मनिरपेक्ष ताकतों को अपील करती है।

कोरेगांव भीमा में दलितों पर हुई हमलों को निन्दा करते हुए दसियों संख्या में दलित, जनवादी, धर्मनिरपेक्ष, प्रगतिशील, हेतुवादी और क्रांतिकारी संगठनों ने 3 जनवरी को महाराष्ट्र बंद का आह्वान किया था। राज्य भर में ही नहीं बल्कि देश भर में हिन्दुत्व हमलों के खिलाफ जनता के आक्रोश भड़क उठी। कई जगहों पर जनता सरकार के खिलाफ जुझारू कार्रवाइयों में उतारू हो गए। बंद का आह्वान करने वाले प्रमुखों में कामरेड प्रकाश अम्बेद्कर और उनके नेतृत्व वाली भारतीय रिपब्लिकन पार्टी जनता के विरोध कार्रवाइयों से आंदोलित होकर बंद को वापस लेना लोगों को निराश किया। भगवा आतंकवादियों ने बम और बंदूक फायर करते हुए, डंडों से सिरों को फाड़ते हुए, महिला-पुरुष अंतर न देखकर हमले किए थे - इस विषय को भुलाकर, उसके विरोध में लोग आंदोलन करने से, उनकी जुझारू कार्रवाइयों से घबराकर, धोखेबाजी हिन्दुत्व नेताओं के वादों से संतुष्ट होकर बंद को वापस लेना किसी को भी खुशी की बात नहीं है।

कोरेगांव भीमा में दलितों पर हमले करने वाले गुण्डें शम्भाजी भीडे और मिलिन्द लिम्बोडी ने अभी भी सरेआम घूम रहे हैं। वे 'जनता के प्रधान सेवक' मोदी के लिए जितना घनिष्ट अनुयायू हैं -2014 चुनाव प्रचार रैलियों को याद करने से पता चलेगा। इस मौके पर दलितों का आत्मसम्मान को ऊंचा उठाते हुए उनके समर्थन में खड़े हुए गुजरात के लोक युव नेता जिग्नेश मेवानी, जेएनयू के छात्र नेता उमर खालीद सहित कईयों को महाराष्ट्र पुलिस ने मुम्बई में गिरफ्तार कर

झूठे मामलों में फंसया है। इसे हमारी पार्टी तीव्र रूप से निन्दा करती है।

हिन्दुत्ववादी मोदी दलित उद्धरण के बारे में चिल्लाना, उत्पीड़ित जनता के पक्षदर अम्बेद्कर को कुटिलता से ऊंचा उठाना हिन्दुत्व शाजिश के हिस्से के सिवाय और कुछ नहीं है। हमें एक सुर में ऐलान करना चाहिए कि कोई भी हो, अपने 'कर्म' को निभाने के बारे में जोर देने वाली भगवत गीता की तरह, ब्राह्मणीय चातुर्वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था और छुआछूत को पालन करने पर जोर देने वाले अभिनव मनु मोदी को अम्बेद्कर का स्तुति-गान करने का कोई नैतिक योग्यता नहीं है, वे दलितों का बात उठाने से बर्दास्त नहीं करेंगे। रोहित वेमुला से लेकर कोरेगांव भीमा में दलित युवक की हत्या तक खून के दब्बे से शासन चलाने वाली हिन्दुत्व शाक्तियों की घिनौनी हथखण्डों के खिलाफ सभी उत्पीड़ित जनता एकताबद्ध होकर संगठित तरीके से संघर्ष करने के लिए हमारी पार्टी अपील करती है। ब्राह्मणीय अवसरवादी राजनीति को भण्डाफोड़ करते हुए सभी जनवादी, धर्मनिरपेक्ष और प्रगतिशील शक्तियां जन आंदोलनों के समर्थन में खड़े होने का यही समय है। इस देश में 2022 तक धर्म और जाति से परे नवभारत को निर्माण करने का मोदी का वादें पूरा लफ्फाजी के सिवाय और कुछ नहीं है। हमारी पार्टी स्पष्ट रूप से ऐलान कर रही है कि जनता के कष्ट-तकलीफों और उन पर होने वाली शोषण को उन्मूलन कर, जाति-धर्म और लिंग के भेदभाव नहीं होने वाली नवजनवादी समाज निर्माण के लिए लड़ने के सिवाय कौनसी भी नवभारत का निर्माण नहीं होगा।

(अभय)
प्रवक्ता,
केन्द्रीय कमेटी, भाकपा (माओवादी)